इन्सान मे दो किस्म के जहाँन पाये जाते हे

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

एक जिस्म और माद्दे का जहान, जिसे हम आंखो से देखकर और हाथो से छूकर महसूस कर लेते हे, और इस जहान के साथ एक बातिनी जहान और हे, जिसे हम ना देख सकते हे और ना छू-सकते हे,

इसी बातिनी दुन्या मे रूह आबाद हे, उसी छिपी हूवी दुन्या मे दिल धडकता हे, उसी मे ख्वाहिशे जन्म लेती हे, इसी मे उमंगे और अरजूये परवान चढते हे, इसी मे खुशी और गम, नफरत और मुहब्बत, हमदर्दी और दुश्मनी जैसे जज्बात परवरीश पाते हे, और मजे की बात ये हे की यही छिपी हूवी दुन्या जिसे हमारी आंखे नही देख सकती इन्सान की असल दुन्या हे, जब तक इस दुन्या का निजाम चलता रहता हे उसी वकत तक इन्सान जिन्दा रहता हे, और उसे मुआशरे मे तमाम इन्सानी हुकूक हासिल होते हे,

लेकिन जहा ये निजाम बन्ध हो जाता हे वो ही इन्सान मुरदा कहलाने लगता हे, और उस्के तमाम इन्सानी हुकूक खत्म हो जाते हे.

फिर जिस तरह इन्सान का जाहिरी जिस्म कभी तंदरूस्त होता हे, इसी तरह रूह भी कभी सेहतमंद होती हे और कभी बीमार हो जाती हे, जिस तरह जुकाम, नजला, बुखार और मुख्तलिफ किस्म के दर्द जिस्म की बीमारीया हे, इसी तरह गम और गुस्सा, खुदगरजी, तकब्बुर और खुदपसंदी रूह और दिल की बीमारीया हे.

●हकीकी ज़िन्दगी कौन सी?

हमारी ज़िन्दगी का वकत जो अल्लाह की याद मे गुजर रहा हे ये तो ज़िन्दगी हे और बाकी सारी की सारी शर्मिंदगी हे, एक बडे मिया से किसी ने पूछा की बडे मिया आपकी उमर कितनी हे? कहने लगे पंदरा साल उसने कहा क्यू जवान बनने का ज्यादा ही शौक हे की पंदरा साल कह रहे हो, कहने लगे की जब से तौबा करके अल्लाह से सुलह की हे पंदरा साल गुजरे हे और यही मेरी असल ज़िन्दगी हे और इस्से पहले वाली सारी शर्मिंदगी हे.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.